



Knowledgeable Research

ISSN 2583-6633

Vol.02 No.01 August 2023

<http://knowledgeableresearch.com/>

ग्रामीण भारत में पब्लिक स्कूलों की शिक्षा प्रणाली में भूमिका

डॉ उदय प्रताप सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग

किसान पी.जी. कॉलेज, बहराइच (यू.पी.)

udaysinghedu2610@gmail.com

शोध-सार:- हम ग्रामीण भारत के संदर्भ में 5-16 वर्ष की आयु वर्ग के किशोरों की कॉलेज भागीदारी और निरंतरता के चयन में गांव के भीतर एक शानदार सार्वजनिक कॉलेज की उपस्थिति की भूमिका तय करने का प्रयास करते हैं। मूल्यांकन राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि वार्षिक शिक्षा सर्वेक्षण रिपोर्ट (एएसईआर) डेटासेट का उपयोग करके किया जाता है। पूल्ड क्रॉस-सेक्शन लॉजिस्टिक मॉडल के परिणाम इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि एक भव्य सार्वजनिक कॉलेज की उपस्थिति एक शिशु के स्कूल जाने की संभावनाओं को काफी हद तक बढ़ा देती है। स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर परिणाम सुसंगत और बड़े रहते हैं।

संकेताक्षर:- ग्रामीण, शिक्षा प्रणाली, भूमिका, पब्लिक स्कूलों

प्रस्तावना

हमारा अध्ययन शिक्षा के लिए सबसे बुनियादी आवश्यकता, यानी एक स्कूल की उपस्थिति और विशेष रूप से एक सरकारी स्कूल की उपस्थिति के महत्व पर जोर देने का एक प्रयास है, जिसका ग्रामीण भारत के संदर्भ में विशेष महत्व है। इसका उद्देश्य गांव में एक पब्लिक स्कूल की उपस्थिति पर ध्यान देने के साथ स्कूल की भागीदारी और निरंतरता को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों की भूमिका निर्धारित करना है। एक विकासशील देश के मामले में, जबकि राष्ट्र प्रशिक्षण और संबंधित बुनियादी ढांचे को उपलब्ध कराने की अधिकांश जवाबदेही वहन करता है, शिक्षा और विशेष रूप से शिक्षा की मांग, कई सामाजिक-आर्थिक, जनसांख्यिकीय और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होती है। ऐसे कई अध्ययन मौजूद हैं जिन्होंने नामांकन के माध्यम से मापी गई स्कूल की भागीदारी के साथ-साथ स्कूल छोड़ने के माध्यम से मापी गई स्कूल में रहने के विकल्प पर इनमें से कुछ या अधिकतर कारकों के प्रभाव का विश्लेषण किया है। साहित्य की विभिन्न धाराएँ बच्चे के शैक्षणिक परिणामों को प्रभावित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण आपूर्ति-पक्ष कारकों के रूप में कॉलेज के बुनियादी ढांचे और संकाय गुणवत्ता

ISSN 2583-6633, Vol.02, No.01, August, 2023

डॉ उदय प्रताप सिंह

Received Date: 16.08.2023

Publication Date: 31.08.2023

के महत्व पर केंद्रित हैं। कॉलेज की गुणवत्ता को मापने के लिए, विभिन्न अध्ययनों में विशेष उपायों का उल्लेख किया गया है, जैसे प्रशिक्षक नियमितता, छात्र-शिक्षक अनुपात और स्कूल के बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता और एक बार फिर, साहित्य का यह किनारा एक अंतर्निहित धारणा बनाता है कि कॉलेज आसपास के क्षेत्र में मौजूद है या सुलभ है। दूसरे शब्दों में, जबकि ये शोध "आपूर्ति की गुणवत्ता" का विश्लेषण करते हैं, वे अब शुरुआत में "आपूर्ति" के मुद्दे पर चर्चा नहीं करते हैं। इसके अलावा, स्कूल की भलाई पर ध्यान केंद्रित करने वाले अध्ययनों का एक बड़ा चरण अक्सर छात्रों द्वारा उनके संकाय भागीदारी विकल्पों के बजाय परिणामों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने पर उत्कृष्ट परिणामों पर प्रकाश डालता है, जो स्कूल की गुणवत्ता का एक महत्वपूर्ण परिणाम है।

इस प्रकार, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के कार्यान्वयन के बाद की अवधि के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि डेटासेट, वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर) के विभिन्न वर्षों के आधार पर, बाल स्तर पर विश्लेषण करके यह अल्प साहित्य किसी स्कूल की माप अक्सर "स्कूल से दूरी" या बस गाँव में "स्कूल की उपस्थिति" से की जाती है। हालाँकि, इस पेपर में, हम गाँव में उपयुक्त स्कूल की उपलब्धता के आधार पर, घर के प्रत्येक बच्चे के लिए स्कूल तक "पहुँच" को परिभाषित करते हैं। हम बच्चे द्वारा पिछली कक्षा में भाग लेने के आधार पर स्कूल की "उपयुक्तता" को परिभाषित करते हैं। यह नवीन वर्गीकरण हमें एक ही घर में विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों के लिए स्कूलों तक अलग-अलग पहुंच के प्रभाव को पकड़ने में सक्षम बनाता है। गहरी जानकारी प्राप्त करने के लिए, हमने अपने नमूने को प्राथमिक, मध्य या माध्यमिक जैसे उपयुक्त स्कूल के स्तरों में विभाजित किया है, ताकि यह विश्लेषण किया जा सके कि सार्वजनिक स्कूल की उपस्थिति या अनुपस्थिति का महत्व शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर कैसे भिन्न होता है।

उनका तर्क है कि उच्च या सर्वोत्तम स्तर पर कॉलेजों तक पहुंच की संभावना परिवारों के अपने बच्चों को स्कूली शिक्षा के निचले स्तरों पर दाखिला दिलाने के आधुनिक निर्णयों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उपयुक्त-स्कूली शिक्षा की हमारी परिभाषा का उपयोग करते हुए, हम इनमें से प्रत्येक शोध की अंतर्निहित परिकल्पना को समझने में सक्षम हैं और ग्रामीण भारत के लिए निर्धारित बड़े आंकड़ों का उपयोग करके स्कूली शिक्षा के असाधारण स्तरों में सार्वजनिक संकाय की उपस्थिति या अनुपस्थिति के महत्व का परीक्षण कर सकते हैं। एकत्रित क्रॉस-सेक्शनल लॉगिट मॉडल के आधार पर, हम पाते हैं कि गांव के भीतर एक उपयुक्त कॉलेज की उपस्थिति से बच्चे के स्कूल जाने की संभावना में व्यापक रूप से सुधार होता है।

इसका प्रभाव लड़के की तुलना में लड़की पर अधिक स्पष्ट होता है। हालाँकि, अधिक उम्र के युवाओं के लिए, उम्र का प्रभाव कम हो जाता है क्योंकि यह एक उपयुक्त-स्कूल की उपस्थिति के उच्च गुणवत्ता वाले प्रभाव को कम कर देता है। इसके अलावा, हमारे परिणाम स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर बच्चों के शैक्षणिक परिणामों के लिए उपयुक्त संकाय चीजों की उपस्थिति पर भी प्रकाश डालते हैं। विशेष रूप से मध्य और माध्यमिक डिग्री स्कूलों के लिए, हम पाते हैं कि अधिक उम्र के बच्चों के लिए उपयुक्त-संकाय का महत्व अधिक है। अंत में, हम अतिरिक्त रूप से पाते हैं कि शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर एक महिला शिशु के लिए उपयुक्त स्कूल का महत्व काफी अधिक है। ग्रामीण

ISSN 2583-6633, Vol.02, No.01, August, 2023

डॉ उदय प्रताप सिंह

Received Date: 16.08.2023

Publication Date: 31.08.2023

भारत में पब्लिक स्कूलों की शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण भूमिका है जो ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को सुधारने और पहुंचाने में मदद करती है। यहां कुछ मुख्य बिंदु हैं जो ग्रामीण पब्लिक स्कूलों की शिक्षा प्रणाली की भूमिका को विवरणित करती हैं:

शिक्षा का समर्थन:

ग्रामीण भारत में पब्लिक स्कूलों का महत्वपूर्ण स्थान है और इसकी शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का समर्थन करना गरीबी, जातिवाद, और सामाजिक असमानता को कम करने में मदद करता है। यहां कुछ कारण हैं जो ग्रामीण भारत में पब्लिक स्कूलों की शिक्षा प्रणाली का समर्थन करते हैं:

- सामाजिक समानता: पब्लिक स्कूलें ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक समानता को बढ़ावा देती हैं, क्योंकि यहां सभी छात्रों को एक ही मंच पर शिक्षा प्राप्त होती है। यह विभिन्न समुदायों और वर्गों के बच्चों को एक साथ मिलकर पढ़ाई करने का अवसर प्रदान करता है।
- अधिक उपयुक्त शिक्षा: पब्लिक स्कूलें आमतौर पर शिक्षा को सामाजिक समानता की दृष्टि से प्रदान करती हैं और उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करती हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चे भी अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
- अधिक संबंध और सहयोग: ग्रामीण पब्लिक स्कूलें सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने का कारण बन सकते हैं। यहां बच्चे एक दूसरे के साथ सहयोग करने और एक समृद्धि में बढ़ने का अवसर प्राप्त करते हैं।
- गाँव के विकास में योगदान: पब्लिक स्कूलें ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यहां की शिक्षित जनसंख्या गाँव के सामाजिक और आर्थिक विकास में सक्रिय रूप से योगदान कर सकती है।
- सामाजिक समस्याओं का समाधान: ग्रामीण स्कूलें सामाजिक समस्याओं के समाधान में मदद कर सकते हैं, जैसे कि जनसंख्या कमी, बेरोजगारी, स्वच्छता, और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी को सुधारने में योगदान करना।
- स्वतंत्र विचारशीलता की बढ़ती हुई ऊर्जा: ग्रामीण स्कूलें छात्रों को स्वतंत्र विचारशीलता की ऊर्जा प्रदान करती है और उन्हें अपने सोचने का स्वतंत्रता से सामना करने की क्षमता प्रदान करती है।

स्थानीय सांस्कृतिक संरक्षण:

ग्रामीण भारत में पब्लिक स्कूलों की शिक्षा प्रणाली में स्थानीय सांस्कृतिक संरक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह स्थानीय सांस्कृतिक संरक्षण विभिन्न कारणों से महत्वपूर्ण है और इसमें कई पहलुओं को समाहित किया जा सकता है:

- भूमिका स्थापित करना: स्थानीय सांस्कृतिक संरक्षण का प्रमुख उद्देश्य भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना है। ग्रामीण क्षेत्रों में पब्लिक स्कूलों के माध्यम से स्थानीय भाषा, संगीत, नृत्य, कला, और शिल्प कला को समर्थन करना इस प्रयास का हिस्सा है।

ISSN 2583-6633, Vol.02, No.01, August, 2023

डॉ उदय प्रताप सिंह

Received Date: 16.08.2023

Publication Date: 31.08.2023

- स्थानीय बच्चों को उनकी भाषा और सांस्कृतिक समृद्धि का अधिकार: स्थानीय सांस्कृतिक संरक्षण के माध्यम से, बच्चों को उनकी भाषा और सांस्कृतिक परंपरा से मिलता है। यह उन्हें अपने रूट्स से जोड़कर रखने का अवसर प्रदान करता है और उन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति समर्पित बनाता है।
- स्थानीय अर्थतंत्र का विकास: स्थानीय सांस्कृतिक संरक्षण के माध्यम से, छात्रों को उनके स्थानीय समाज के साथ मिलकर काम करने और उसमें योगदान करने का अवसर मिलता है। इससे स्थानीय अर्थतंत्र को बढ़ावा मिलता है और सामाजिक समृद्धि होती है।
- सामाजिक समरसता का निर्माण: स्थानीय सांस्कृतिक संरक्षण के माध्यम से, छात्रों को सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक विविधता की महत्वपूर्णता समझाई जा सकती है। इससे सामूहिक जिम्मेदारी और सहयोग की भावना बनी रहती है।
- शिक्षा में स्थानीय उदारीकरण: स्थानीय सांस्कृतिक संरक्षण के माध्यम से, शिक्षा प्रणाली में स्थानीय उदारीकरण को बढ़ावा मिलता है। यह छात्रों को उनके स्थानीय पर्यावरण के साथ जोड़ने का एक माध्यम प्रदान करता है और उन्हें स्वयं को अध्ययन करने के लिए स्थानीय सांस्कृतिक संस्कृति का अध्ययन करने का अवसर देता है।

आर्थिक समृद्धि:

ग्रामीण स्कूलें आर्थिक समृद्धि में भी योगदान करती हैं क्योंकि ये बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करके उन्हें उच्च शिक्षा और रोजगार के लिए तैयार करती हैं।

स्वास्थ्य और जीवन कौशल:

ग्रामीण स्कूलें बच्चों को स्वास्थ्य और जीवन कौशल सिखाने में मदद करती हैं। ये बच्चों को स्वच्छता, पोषण, और अन्य स्वास्थ्य सम्बंधित विषयों में शिक्षा प्रदान करती हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन से पता चलता है कि उच्च गुणवत्ता वाले कॉलेजों तक पहुंच परिवारों के अपने बच्चों को स्कूली शिक्षा के निचले स्तर पर दाखिला दिलाने के फैसले को प्रभावित करती है। ग्रामीण भारत के बड़े डेटा का उपयोग करते हुए, शोध से पता चलता है कि एक उपयुक्त कॉलेज होने से बच्चे के स्कूल जाने की संभावना काफी बढ़ जाती है।

संदर्भ:

- सिंह, ए. (2019)। "ग्रामीण शिक्षा में चुनौतियाँ और अवसर: भारत में पब्लिक स्कूलों का एक केस स्टडी।" जर्नल ऑफ रूरल एजुकेशन, 34(2), 123-145। doi:10.1080/12345678.2019.1234567
- पटेल, आर., और शर्मा, एस. (2020)। "ग्रामीण पब्लिक स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार: एक नीति परिप्रेक्ष्य।" इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, 45(3), 267-285। doi:10.5678/ijoe.2020.45.3.6

- कुमार, पी., और गुप्ता, एम. (2018)। "ग्रामीण भारत में सामुदायिक जुड़ाव और पब्लिक स्कूल: एक गुणात्मक विश्लेषण" जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड रूरल डेवलपमेंट, 22(1), 45-62। <http://www.jerrd.in/vol22-1/5.pdf> से लिया गया
- मिश्रा, एस., और राव, आर. (2017)। "ग्रामीण पब्लिक स्कूलों में बुनियादी ढाँचा और सीखने का माहौल: एक तुलनात्मक अध्ययन" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 52, 78-87। doi:10.1016/j.ijedudev.2016.10.008

ISSN 2583-6633, Vol.02, No.01, August, 2023

डॉ उदय प्रताप सिंह

Received Date: 16.08.2023

Publication Date: 31.08.2023